मेन्स मास्टर

दिसंबर 2023 तक परिवारों का ऋण नए उच्च स्तर पर पहुंच जाएगा

संदर्भ
• भारत में वित्तीय बचत में गिरावट के साथ-साथ घरेलू ऋण के स्तर में वृद्धि देखी जा रही है।

पृष्ठभूमि
• भारतीय रिजर्व बैंक (RBI) ने शुरू में 2022-23 में शुद्ध वित्तीय बचत के लिए 47 साल के निचले स्तर का अनुमान लगाया था।
• वित्त मंत्रालय ने इन निष्कर्षों पर विवाद किया, यह तर्क देते हुए कि भौतिक संपत्ति खरीदने के लिए उधार में वृद्धि आर्थिक आत्मविश्वास का संकेत है।
• संशोधित राष्ट्रीय आय अनुमान अभी भी 47 वर्षों में सबसे कम शुद्ध वित्तीय बचत दिखाते हैं, साथ ही महत्वपूर्ण घरेलू ऋण भी दिखाते हैं।

रिपोर्ट के मुख्य निष्कर्ष
1.भारत में घरेलू ऋण का स्तर दिसंबर 2023 तक सकल घरेलू उत्पाद के 40% के सर्वकालिक उच्च स्तर पर पहुँच गया है।
2.घरेलू शुद्ध वित्तीय बचत सकल घरेलू उत्पाद के लगभग 5% के अपने निम्नतम स्तर पर आ गई है, जबकि 2011-12 और 2019-20 के बीच दर्ज औसत 7.6% था।
3.घटती हुई शुद्ध वित्तीय बचत का कारण कमजोर आय वृद्धि, मजबूत खपत और परिवारों द्वारा भौतिक बचत में वृद्धि है।
4. घरेलू ऋण के बढ़ते स्तर मुख्य रूप से असुरक्षित व्यक्तिगत ऋणों से प्रेरित हैं, इसके बाद सुरक्षित ऋण, कृषि ऋण और व्यावसायिक ऋण हैं।
5. 2022-23 में शुद्ध वित्तीय बचत में गिरावट और कम बचत को अपवाद के रूप में नहीं देखा जाता है, और विश्लेषकों का अनुमान है कि ये बचत 2023-24 में भी जीडीपी के 5-5.5% के दायरे में रहेगी।

निष्कर्ष निकाले जाने वाले
1. उच्च घरेलू ऋण स्तर और कम वित्तीय बचत भारतीय परिवारों में बढ़ते वित्तीय संकट का संकेत दे सकते हैं।
2. उपभोग और निवेश (जैसे रियल एस्टेट) को वित्तपोषित करने के लिए अधिक भौतिक बचत और उधार की ओर बदलाव घरेलू व्यवहार और जोखिम लेने की इच्छा में बदलाव का संकेत दे सकता है।
3. इस प्रवृत्ति के समग्र अर्थव्यवस्था पर प्रभाव पड़ सकते हैं, क्योंकि यह उपभोग, निवेश और बैंकिंग क्षेत्र की संपत्ति की गुणवत्ता को प्रभावित कर सकता है।
4.नीति निर्माताओं को वित्तीय स्थिरता और घरेलू लचीलापन सुनिश्चित करने के लिए आय वृद्धि, ऋण तक पहुंच और वित्तीय साक्षरता जैसे इस प्रवृत्ति में योगदान देने वाले अंतर्निहित कारकों को संबोधित करने की आवश्यकता हो सकती है।
5.घरेलू वित्तीय स्वास्थ्य पर आगे अनुसंधान और निगरानी की आवश्यकता है, क्योंकि इसके व्यापक समष्टि आर्थिक निहितार्थ हैं।

नीति निर्माताओं के लिए सबक
• आय वृद्धि को बढ़ावा देने के लिए नीतियों की आवश्यकता है, विशेष रूप से निम्न आय वाले परिवारों में।
• वित्तीय बचत को प्रोत्साहित करने के लिए प्रोत्साहनों पर विचार किया जाना चाहिए।
• असुरक्षित व्यक्तिगत ऋणों से जुड़े जोखिमों को कम करने में मदद करने के लिए जिम्मेदार ऋण प्रथाओं पर ध्यान केंद्रित करने की आवश्यकता है।

आगे की राह
• घरेलू ऋण और बचत प्रवृत्तियों की निरंतर निगरानी आवश्यक है।
• नीतिगत हस्तक्षेपों को भौतिक परिसंपत्तियों में निवेश को प्रोत्साहित करने और परिवारों के लिए वित्तीय बचत की स्वस्थ संस्कृति को बढ़ावा देने के बीच संतुलन बनाना चाहिए।
• आय असमानता के मूल कारणों को संबोधित करना भारतीय परिवारों के लिए दीर्घकालिक वित्तीय स्थिरता को बढ़ावा देने के लिए महत्वपूर्ण होगा।

राज्यों को केंद्र के खिलाफ अदालत जाने के लिए मजबूर किया जा रहा है: सुप्रीम कोर्ट

संदर्भ
• कई राज्य वित्तीय सहायता और संसाधन आवंटन के मुद्दों पर केंद्र सरकार (भारत की संघीय सरकार) के साथ कानूनी लड़ाई में उलझे हुए हैं।
• यह प्रवृत्ति सहकारी संघवाद में संभावित गिरावट को उजागर करती है।

पृष्ठभूमि
• तमिलनाडु ने केंद्र पर आपदा राहत निधि में देरी करने के लिए "सौतेला व्यवहार" करने का आरोप लगाया है।
• केरल ने अपनी उधार सीमा में हस्तक्षेप को लेकर केंद्र पर मुकदमा दायर किया है, जिससे वित्तीय संकट पैदा हो गया है।
• कर्नाटक सूखे के कारण मानवीय संकट का सामना कर रहा है लेकिन छह महीने से उसे कोई आपदा राहत धनराशि नहीं मिली है।

सुप्रीम कोर्ट की टिप्पणियाँ
• सुप्रीम कोर्ट ने केंद्र के खिलाफ कानूनी कार्रवाई करने वाले राज्यों की बढ़ती संख्या पर चिंता जताई.
• न्यायमूर्ति बी.आर. गवई ने संघर्ष के बजाय सहयोग की आवश्यकता पर प्रकाश डालते हुए केंद्र को राज्यों के साथ प्रतिस्पर्धा में शामिल होने के प्रति आगाह किया।

क्या "जुझारू संघवाद" बढ़ रहा है?
एक मजबूत तर्क दिया जाना चाहिए कि "जुझारू संघवाद" बढ़ रहा है, खासकर संघीय सरकार संरचनाओं वाले देशों में। ऐसा क्यों और कैसे हो रहा है, इसका विवरण यहां दिया गया है:

जुझारू संघवाद क्या है?
• **सहयोग से प्रस्थान:** जुझारू संघवाद सहकारी संघवाद के पारंपरिक मॉडल से दूर एक बदलाव का प्रतिनिधित्व करता है जहां सरकार के विभिन्न स्तर (राष्ट्रीय, राज्य/प्रांतीय, आदि) नीति पर सहयोग करते हैं और शक्ति साझा करते हैं।
• **बढ़ा हुआ तनाव और संघर्ष:** जुझारू संघवाद में प्रतिस्पर्धा पर जोर दिया जाता है। राज्य या प्रांत कानूनी, राजनीतिक और जनमत रणनीति का उपयोग करके केंद्र सरकार के अधिकार को अधिक बार चुनौती दे सकते हैं, जिसे वे अतिरेक के रूप में देखते हैं।

जुझारू संघवाद को बढ़ावा देने वाले कारक:
• **राजनीतिक ध्रुवीकरण:** सरकार के विभिन्न स्तरों पर पार्टियों के बीच बढ़ते राजनीतिक विभाजन से संघीय प्रणालियों में अधिक घर्षण होता है। राज्य स्तर पर सत्ता में रहने वाली पार्टियाँ अपने राजनीतिक विरोधियों द्वारा नियंत्रित राष्ट्रीय सरकार द्वारा लागू की गई नीतियों का सक्रिय रूप से विरोध कर सकती हैं।
• **संसाधन विवाद:** संघीय प्रणालियों में फंडिंग, कराधान और संसाधनों के वितरण पर बहस एक निरंतरता है। जब ये अत्यधिक विवादास्पद हो जाते हैं, तो यह भावना बढ़ती है कि राज्यों के साथ गलत व्यवहार किया जा रहा है, जुझारू संघवाद की प्रवृत्ति बढ़ती है।
• **वैचारिक मतभेद:** जब केंद्रीय और क्षेत्रीय सरकारें सामाजिक कार्यक्रमों, आर्थिक विनियमन या पर्यावरण नीति जैसे मुद्दों पर मौलिक रूप से भिन्न विचार रखती हैं, तो संघर्ष की संभावना काफी बढ़ जाती है।
• **सत्ता का केंद्रीकरण:** राज्य/प्रांतीय सत्ता के पारंपरिक क्षेत्रों पर अपना नियंत्रण बढ़ाने के लिए केंद्र सरकार द्वारा किए गए कथित प्रयास मजबूत प्रतिरोध को जन्म दे सकते हैं और राज्यों को एक जुझारू संघवादी रुख अपनाने के लिए प्रेरित कर सकते हैं।

जुझारू संघवाद की अभिव्यक्तियाँ
• **कानूनी चुनौतियाँ:** राज्य या प्रांत अक्सर केंद्र सरकार के खिलाफ मुकदमा दायर करते हैं जब उन्हें लगता है कि संघीय कानून या कार्य उनके संवैधानिक अधिकारों का उल्लंघन करते हैं।
• **सार्वजनिक अभियान:** क्षेत्रीय सरकारें राष्ट्रीय सरकार की उन नीतियों के खिलाफ समर्थन जुटाने के लिए मीडिया और जनसंपर्क अभियान शुरू कर सकती हैं जिनका वे विरोध करती हैं।
• **अवज्ञा या गैर-अनुपालन:** कुछ मामलों में, राज्य संघीय नियमों या कार्यक्रमों को लागू करने से इनकार कर सकते हैं जो उन्हें आपत्तिजनक लगते हैं।
• **राजनीतिक लामबंदी:** राज्य सरकारें केंद्र सरकार के प्रति राजनीतिक विरोध को लामबंद करने के लिए सक्रिय रूप से काम कर सकती हैं, जिससे तनाव का चक्र बढ़ सकता है।

नतीजे
• **नीतिगत गतिरोध:** जुझारू संघवाद निर्णय लेने की प्रक्रिया को धीमा कर सकता है और राष्ट्रीय नीतियों के कार्यान्वयन में बाधा उत्पन्न कर सकता है।
• **विश्वास का क्षरण:** बढ़ा हुआ संघर्ष सरकार के विभिन्न स्तरों के बीच विश्वास को नष्ट कर देता है, जिससे भविष्य में सहयोग और अधिक कठिन हो जाता है।
• **सार्वजनिक भ्रम:** नागरिकों का राजनीतिक प्रक्रिया से मोहभंग हो सकता है क्योंकि वे अंदरूनी कलह और शिथिलता को देखते हैं।
• **अस्थिरता की संभावना:** चरम मामलों में, गहरे विभाजन से प्रेरित जुझारू संघवाद, संपूर्ण संघीय प्रणाली की स्थिरता को खतरे में डाल सकता है।

निष्कर्ष
• राज्यों द्वारा केंद्र के खिलाफ सुप्रीम कोर्ट जाने की बढ़ती घटनाएं सहकारी संघवाद के सिद्धांतों में चिंताजनक गिरावट का संकेत देती हैं।
• इन संघर्षों के अंतर्निहित कारणों की जांच करना और पूरे देश के लाभ के लिए शासन में अधिक सहयोगात्मक दृष्टिकोण बहाल करने के तरीके ढूंढना आवश्यक है।

पहलू	प्रतिद्वंद्वी, टकराव पूर्ण संघवाद	सहयोगात्मक, पारस्परिक सहायक संघवाद
शासन का दृष्टिकोण	कठोर, केंद्र द्वारा शीर्ष-नीचे नियंत्रण	लचीला, केंद्र और राज्यों के बीच साझा जिम्मेदारी
विवादों का समाधान	कानूनी चुनौतियों और अदालती लड़ाइयों के माध्यम से	संवाद, वार्ता और सहमति से निर्णय लेने के माध्यम से
राज्यों की स्वायत्तता	सीमित, केंद्र अधिक नियंत्रण करता है	राज्यों के लिए अधिक स्वायत्तता और लचीलापन
नीति निर्माण	केंद्रीकृत, राज्य की सीमित भागीदारी के साथ	विकेंद्रीकृत, राज्यों की सक्रिय भागीदारी के साथ
वित्त व्यवस्था	शर्तीय अनुदान, विशिष्ट योजनाओं से जुड़े	अभंधित अनुदान, राज्यों के पास उपयोग में लचीलापन
जवाबदेही	मुख्य रूप से केंद्र के प्रति	केंद्र और राज्य के लोगों दोनों के प्रति
प्रमुखता	केंद्र और राज्यों के बीच शक्ति गतिकी	सहयोगात्मक समस्या-समाधान और सामूहिक प्रगति
उदाहरण	तमिलनाडु बनाम केंद्र आपदा राहत निधि पर, केरल बनाम केंद्र उधारी सीमाओं पर	GST परिषद, अंतर-राज्य परिषद

मेन्स - इनशॉर्ट्स

पारंपरिक तरीकों में नवाचारों से राजस्थान के शेखावाटी में खेती में क्रांति आ रही है

राजस्थान के किसान नवीन तकनीकों से सूखे से निपट रहे हैं

- शेखावाटी क्षेत्र के किसान भूजल स्तर में गिरावट और अप्रत्याशित वर्षा का सामना कर रहे हैं, जिससे पारंपरिक खेती के तरीके खतरे में पड़ गए हैं।
- अनुकूलन के लिए, किसान जल उपयोग को अनुकूलित करने के लिए वर्षा जल संचयन, ड्रिप सिंचाई, जलवायु-नियंत्रित पॉलीहाउस और सौर ऊर्जा जैसी नवीन तकनीकों को लागू कर रहे हैं।
- वे उच्च मूल्य वाली सब्जियाँ और फल उगाकर और अपनी उपज को जैम और प्रिजर्व जैसे मूल्यवर्धित उत्पादों में बदलकर आय में वृद्धि करके विविधता ला रहे हैं।
- कुछ किसान टिकाऊ और लाभदायक कृषि के लिए जैविक खेती के तरीकों को अपना रहे हैं।
- इन नवाचारों से आय में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है और फसल की पैदावार में वृद्धि हुई है, जिससे कृषि क्षेत्र में नई जान आ गई है।
- इन सफलताओं के बावजूद, किसान शुष्क क्षेत्र में जल सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए नहर के पानी तक पहुँच की माँग करके दीर्घकालिक समाधान की माँग कर रहे हैं।

प्रीलिम्स बूस्टर

बंगाल में पारिवारिक विवाद के केंद्र में मतुआ संप्रदाय के संस्थापक का घर

- मतुआ गोपालगंज के हरिचंद ठाकुर द्वारा स्थापित एक स्थानीय हिंदू धार्मिक संप्रदाय है, जिसका अर्थ है ईश्वरीय ध्यान में लीन होना।
- मतुआ संप्रदाय एकेश्वरवादी है, जो वैदिक अनुष्ठानों के बजाय विश्वास, भक्ति और ध्यान पर ध्यान केंद्रित करता है।
- वे समानता में विश्वास करते हैं, पुरुषों और महिलाओं दोनों को धार्मिक शिक्षक होने की अनुमति देते हैं और पुरुषों और महिलाओं के लिए समान अधिकारों को बढ़ावा देते हैं।
- मतुआ त्योहार में सामुदायिक पूजा, कीर्तन गाना और जयदबका और शंख जैसे संगीत वाद्ययंत्र बजाना शामिल है।
- श्रीश्रीहरिलीलामृत मतुआ का एक प्रमुख धार्मिक ग्रंथ है, जो सभी प्राणियों के प्रति दया और जीवन की समानता पर जोर देता है।
- मतुआ बांग्लादेश और पश्चिम बंगाल में मौजूद हैं, उनका मुख्य मंदिर ओरकांडी, गोपालगंज में है, जहां हरिचंद ठाकुर के सम्मान में एक वार्षिक मेला आयोजित किया जाता है।
- मतुआ संप्रदाय की मान्यताएं, प्रथाएं और त्योहार प्रेम, समानता और ईश्वर के प्रति भक्ति के आसपास केंद्रित हैं।

जलवायु परिवर्तन के खिलाफ़ आवाज़ उठाना मौलिक अधिकार है: सुप्रीम कोर्ट

- भारत के सर्वोच्च न्यायालय ने जलवायु परिवर्तन के प्रतिकूल प्रभावों के खिलाफ अधिकार को संविधान के अनुच्छेद 21 और 14 से जुड़ा एक मौलिक मानव अधिकार माना है।
- मुख्य न्यायाधीश चंद्रचूड़ ने जोर दिया कि जीवन और समानता के अधिकार स्वच्छ, स्थिर पर्यावरण से जुड़े हुए हैं, जो स्वास्थ्य और वंचित समुदायों को प्रभावित करते हैं।
- ग्रेट इंडियन बस्टर्ड प्रजाति के अस्तित्व से जुड़े एक हालिया फैसले में जलवायु परिवर्तन और इसकी प्रतिकूलताओं से निपटने के महत्व पर प्रकाश डाला गया है।
- न्यायालय ने ऊर्जा की मांग में वृद्धि, वायु प्रदूषण और भूजल स्तर में गिरावट जैसे कारणों का हवाला देते हुए जलवायु परिवर्तन से निपटने में सौर ऊर्जा की महत्वपूर्ण भूमिका पर जोर दिया।
- सौर ऊर्जा जैसे नवीकरणीय ऊर्जा स्रोतों की ओर रुख करने से न केवल ऊर्जा सुरक्षा बढ़ती है बल्कि वायु प्रदूषण को कम करने और सार्वजनिक स्वास्थ्य में सुधार करने में भी मदद मिलती है।

अध्ययन में कहा गया है कि उच्च ग्लाइसेमिक इंडेक्स आहार और मधुमेह के बीच मजबूत संबंध है।

- कम ग्लाइसेमिक इंडेक्स और कम ग्लाइसेमिक लोड वाले आहार का सेवन करने से टाइप 2 मधुमेह के विकास को रोकने में मदद मिल सकती है, खासकर उच्च बीएमआई वाले व्यक्तियों के लिए।
- द लैंसेट डायबिटीज एंड एंडोक्रिनोलॉजी में प्रकाशित एक अध्ययन में उच्च जीआई और जीएल आहार और पांच महाद्वीपों में टाइप 2 मधुमेह के जोखिम के बीच एक मजबूत संबंध पाया गया।
- ग्लाइसेमिक इंडेक्स (जीआई) रक्त शर्करा प्रतिक्रिया के आधार पर कार्बोहाइड्रेट युक्त खाद्य पदार्थों को रैंक करता है, जबकि ग्लाइसेमिक लोड (जीएल) एक सर्विंग में कार्बोहाइड्रेट की गुणवत्ता और मात्रा दोनों पर विचार करता है।
- ग्लाइसेमिक इंडेक्स (जीआई) कार्बोहाइड्रेट युक्त खाद्य पदार्थों को इस आधार पर रैंक करता है कि वे कितनी जल्दी रक्त शर्करा के स्तर को बढ़ाते हैं, उच्च जीआई खाद्य पदार्थ तेजी से वृद्धि का कारण बनते हैं
- ग्लाइसेमिक लोड (जीएल) एक सर्विंग में कार्बोहाइड्रेट की गति और मात्रा दोनों को ध्यान में रखता है, जो रक्त शर्करा के स्तर पर भोजन के प्रभाव का अधिक सटीक प्रतिबिंब प्रदान करता है।
- जीएल भोजन के लिए समग्र रक्त शर्करा प्रतिक्रिया की भविष्यवाणी करने के लिए एक मूल्यवान उपकरण है, जो रक्त शर्करा प्रबंधन, वजन नियंत्रण और समग्र स्वास्थ्य के लिए सूचित विकल्प बनाने में मदद करता है।

कोचीन शिपयार्ड ने अमेरिकी नौसेना के साथ जहाज मरम्मत समझौते पर हस्ताक्षर किए

- कोचीन शिपयार्ड ने जहाजों की मरम्मत के लिए अमेरिकी नौसेना के साथ समझौते पर हस्ताक्षर किए, ऐसा करने वाला यह तीसरा भारतीय शिपयार्ड बन गया।
- मास्टर शिपयार्ड रिपेयर एग्रीमेंट (MSRA) का उद्देश्य भारत और अमेरिका के बीच जहाज रखरखाव में सहयोग बढ़ाना है।
- भारत और अमेरिका भारत को अमेरिकी नौसेना की संपत्ति के रखरखाव के लिए एक केंद्र के रूप में स्थापित करना चाहते हैं, जिससे लागत और टर्नअराउंड समय कम हो।
- यू.के. के लिटोरल रिस्पांस ग्रुप ने चेन्नई में एलएंडटी शिपयार्ड में रखरखाव किया, जो भारत-यू.के. रक्षा सहयोग को प्रदर्शित करता है।